सात चीनी भाई

लेखन: मार्गरेट माहे

चित्र: जीन व मोउ-सिन त्सैंग

भाषान्तर: पूर्वा याज्ञिक कुशवाहा

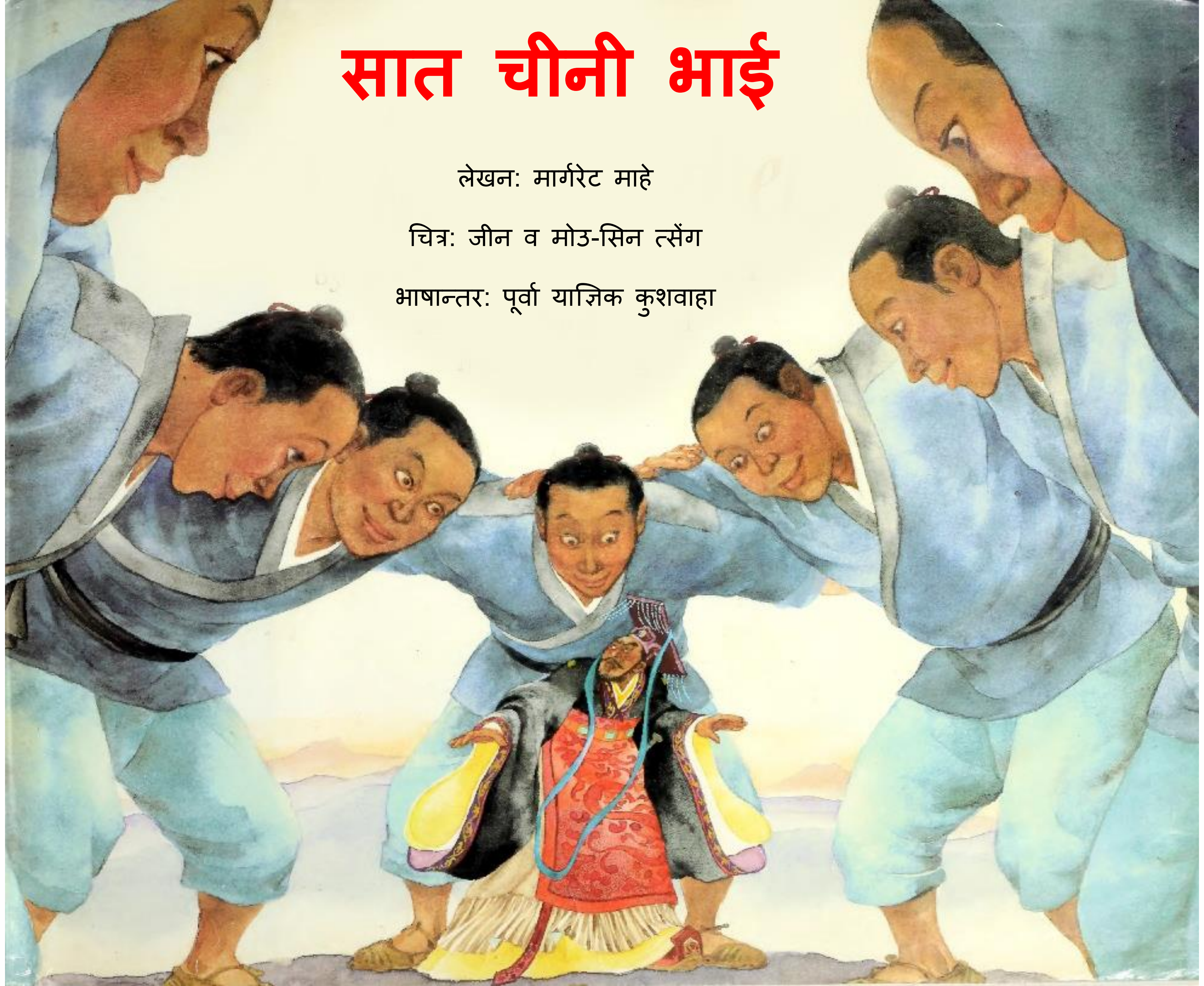

सात चीनी भाई

लेखन: मार्गरेट माहे

चित्र: जीन व मोउ-सिन त्सेंग

भाषान्तर: पूर्वा याज्ञिक कुशवाहा

सात चीनी भाई

लेखन: मार्गरेट माहे

चित्र: जीन व मोउ-सिन त्सेंग

भाषान्तर: पूर्वा याज्ञिक कुशवाहा

संपादक की कलम से

हालांकि इस कहानी के सात भाई काल्पनिक पात्र हैं, यह कहानी शास्त्रीय गप्प-कथा परंपरा का हिस्सा है। इस हान कथा में एक ऐतिहासिक पात्र, बादशाह चिन शी हुआंग (259 - 210 ईस्वी पूर्व) को मुख्य प्रतिरोधी के रूप में शामिल किया गया है। चिन शी हुआंग को अमूमन चीन के विभिन्न प्रतिस्पर्धी राज्यों को एक केन्द्रीय शासन के नीचे ला, चीन के एकीकरण का श्रेय दिया जाता है।

चिन शी हुआंग ने चीन की महान दीवार के निर्माण की योजना बनाई थी। यह एक महती योजना थी, जो चिन शी हुआंग के शासन काल में शुरू हुई और वंशवादी शासन के तहत अगली कई शताब्दियों तक जारी रही। उत्तरी चीन में 4,000 मील (6,400 किलो मीटर) लम्बी यह दीवार उत्तर से आने वाले हमलावरों को रोकने के लिए बनाई गई थी। इसे पत्थरों, ईटों और मिट्टी से चिना गया था। यह दुनिया का सबसे लम्बा मानव निर्मित ढ़ांचा है। इसे बनाने का काम कठिन, कमर तोड़ व बेहद ख़तरनाक था, जिसने हज़ारों जबरन लगाए गए निर्माण मज़दूरों की जान ली थी। इन लोगों की पीड़ा ने ही हमारे सात नायकों को मज़दूरों के पक्ष में अपनी विलक्षण ताकतों का उपयोग करने को उकसाया था।

इस कहानी के अंत में न्याय मिलता है और तानाशाह बादशाह चिन शी हुआंग की असमय मौत सातवें भाई के हाथों (दरअसल उसके आँसुओं से) होती है। पर वास्तव में इतिहास यह बताता है कि चिन शी हुआंग की मौत तब हुई जब वह अपनी शक्ति संगठित करने के ग्यारह वर्ष बाद अपने साम्राज्य का मुआयना करने निकला था। सम्राट कितना भी क्रूर क्यों न रहा हो, वह प्राचीन चीनी इतिहास का सबसे रंगीला चरित्र था।

धूपबत्तीदान जला दिया गया है। हम तुम सबको आमंत्रित करते हैं कि तुम सैकड़ों शताब्दियों पहले के युग में, चीन के प्रथम दरबार की शानो-शौकत और ताम-झाम में कदम रखो और कुख्यात चिन शी हुआंग और विलक्षण शक्तियों से लैस सात भाइयों से मुलाकात करो।

एक समय की बात है, जब चिन शी हुआंग पूरे चीन का बादशाह था, एक खूबसूरत पहाड़ी की तलहटी में सात अनूठे भाई रहते थे। वे एक जैसे चलते थे, एक जैसे बोलते थे, वे दिखते भी एक ही जैसे थे, इतने एक से कि उनमें फर्क करना ही मुश्किल था। पर इसके बावजूद ऐसा कुछ भी था जो हरेक भाई का निहायत ख़ास था। हरेक की एक अनोखी शक्ति थी, जो सिर्फ़ उसकी थी।

पहले भाई के कान इतने तेज़ थे कि वह सौ मील दूर किसी मक्खी को भिनभिनाते सुन सकता था, जबकि दूसरे भाई की आँखें इतनी तेज़ थीं कि वह सौ मील दूर चीन की महान दीवार के पर बैठी मक्खी तक को छींकते और खुद पर तरस खाते देख सकता था। तीसरा भाई असाधारण रूप से ताकतवर था, वह सीधी रेखा में चलते हुए चीन को पार कर सकता था, क्योंकि वह राह में पड़ने वाले पहाड़ों को उठा कर हटाता और तब उन्हें ठीक उसी जगह वापस रख दे सकता था। चौथा भाई भी बलवान था, उसकी हड्डियाँ लोहे की बनीं थीं, सो वे न तो टूट सकती थीं, न लचक या झुक सकती थीं।

पाँचवें भाई के पैर पेड़ के तनों जितने मोटे और लम्बे हो सकते थे जबकि छटा भाई तपते सूरज में काम करने के बावजूद कभी गरमी महसूस नहीं करता था। सातवाँ भाई परिवार का नन्हा-मुन्ना था, उसके छहों भाई उसे हमेशा हंसते-मुस्काराते रखने की कोशिश करते थे। इसलिए, क्योंकि दुखी होते ही वह गरम-गरम नमकीन आँसू टपकाने लगता था। उसके आँसू की एक बूंद एक पूरे गाँव को डुबा सकती थी।

सातों भाई हिलमिल कर खुशी-खुशी साथ रहते थे। सो सातवें भाई को आँसू बहाने का कोई कारण मिला ही नहीं था। पर एक दिन जब वे अपने खूबसूरत पहाड़ की तलहटी में काम कर रहे थे, पहले भाई ने अपना सिर उठाया (जिसके दोनों तरफ उसके अनोखे कान थे) और बोला, ''सौ मील दूर, चीन की महान दीवार के पास से मुझे लोगों के चीखने-कराहने की आवाज़ें आ रही हैं। दूसरे, ज़रा देख कर बताओ भाई कि मामला क्या है?''

दूसरे भाई ने अपनी दूरदर्शी आँखों से चीन की महान दीवार की ओर देखा। ''अई या!'' वह चीखा, ''चीन की महान दीवर में एक बड़ा भारी सुराख़ हो गया है। मैं सौ गरीब-गुरबों को दिन और रात, रात और दिन खटते देख रहा हूँ। वे थकेहारे और भूखे नज़र आ रहे हैं। लगता है उन्हें न तो सोने दिया जाता है, न खाने। वे शायद तब तक मशक्कत करते रहेंगे जब तक दीवार की मरम्मत पूरी न हो जाए।''

“अई या! मैं यह सह नहीं सकता,” सातवाँ भाई रुआंसा हो बोला। उसे खुद काम करते-करते भूख लगी हुई थी। ऐसा लगा कि वह उन ग़रीब मेहनतकशों की हमदर्दी में रो ही पड़ेगा।

“अरे रोना मत!” तीसरा भाई जल्दी से बोला। “मैं उनकी मदद करने जाता हूँ।” वह तेज़ी से चल पड़ा और पलक झपकने से पहले, आधे ही मिनट में वहाँ जा पहुँचा।

वह फ़ौरन मरम्मत के काम में जुट गया, वह एक से दूसरे हाथ में भारी पत्थरों को यों उछालने लगा मानों वे पंख से हलके हों। अंधेरा होने तक दीवार का सुराख पूरी तरह भर चुका था। तब तीसरा भाई थक कर झपकी लेने लेटा।

जब बादशाह ने यह सुना कि एक अकेले आदमी ने एक ही दोपहर में दीवार की मरम्मत कर दी है तो वह शुक्रगुज़ार नहीं हुआ, बल्की वह फिक्र में पड़ गया।

"इतना ताकतवर इन्सान तो बला की मुसीबत बन सकता है," बादशाह ने मन ही मन सोचा। "वैसे ताकतवर लोग बादशाह के लिए बड़े काम के भी हो सकते हैं, पर यह तो कुछ ज़्यादा ही ताकतवर है। हो सकता है कि उसे गिरफ्तार करने के लिए एक सेना काफ़ी न हो। मुझे दो सेनाएं भेजनी चाहिए।"

जब तीसरा भाई अपनी झपकी ले उठा, उसने खुद को दो सेनाओं से घिरा पाया।

"हमारे अलौकिक बादशाह (जिनका मुख उगते सूरज से भी अधिक चमकदार है) के हुक्म से तुम्हें कल सुबह मौत के घाट उतार दिया जाएगा," दोनों सेनाओं के सेनापतियों ने घोषणा की। "कैदी को बादशाह के महल में ले जाओ!" उन्होंने सिपाहियों को हुक्म दिया।

यह सुन तीसरे भाई की रुलाई छूट पड़ी।

सौ मील दूर उसे ख़ूबसूरत पहाड़ की तलहटी में पहले भाई ने तीसरे को रोते सुना।

"तीसरा मुसीबत में होगा!" उसने कहा। दूसरे भाई ने दूर नज़र डाली। "अई या! तीसरे भाई को महल में ले जाया जा रहा है। वे उसे सुबह मार डालने वाले हैं। कोई अचरज नहीं कि वह रो रहा है।"

"फ़िक्र न करो!" चौथे भाई ने कहा, उसने देख लिया था कि सातवाँ रोने की कगार पर है। "मैं उसकी जगह ले लूंगा। अलौकिक बादशाह (जिनका मुख उगते सूरज से भी अधिक चमकदार है) मेरे सिर को कलम करने की कोशिश जितनी बार करना चाहे करे। शायद इससे उसे कुछ बेहतर महसूस हो।"

वह जितनी जल्दी हो सकता था चला और पलक झपकने से भी पहले आधी मिनट में वहाँ पहुँच गया। वह दोनों सेनाओं के बीच लुकते-छिपते तीसरे भाई के पास पहुँचा, जो उसके इन्तज़ार में जाग रहा था।

तो तीसरा भाई घर लौट गया और चौथे ने उसकी जगह ले ली।

अगले दिन पूरे दिन भर दोनों सेनाओं के अफ़सरों ने चौथे भाई के सिर को उसके धड़ से अलग करने की बार-बार कोशिश की। पर एक के बाद एक तलवार उसकी लोहे की हड्डियों से टकरा कर मुड़-तुड़ जाती और तब टूट जाती। आखिर उन्हें अज़ीम बादशाह से (जिनकी फुसफुसाहट तूफ़ान की गर्जना जैसी थी) कहना ही पड़ा कि वे कैदी का सिर कलम नहीं कर सकें हैं।

"लोहे की हड्डियों से बना आदमी!" अज़ीम बादशाह चिंघाड़ा। "कल उसे गहरे समन्दर में डुबा दो!"

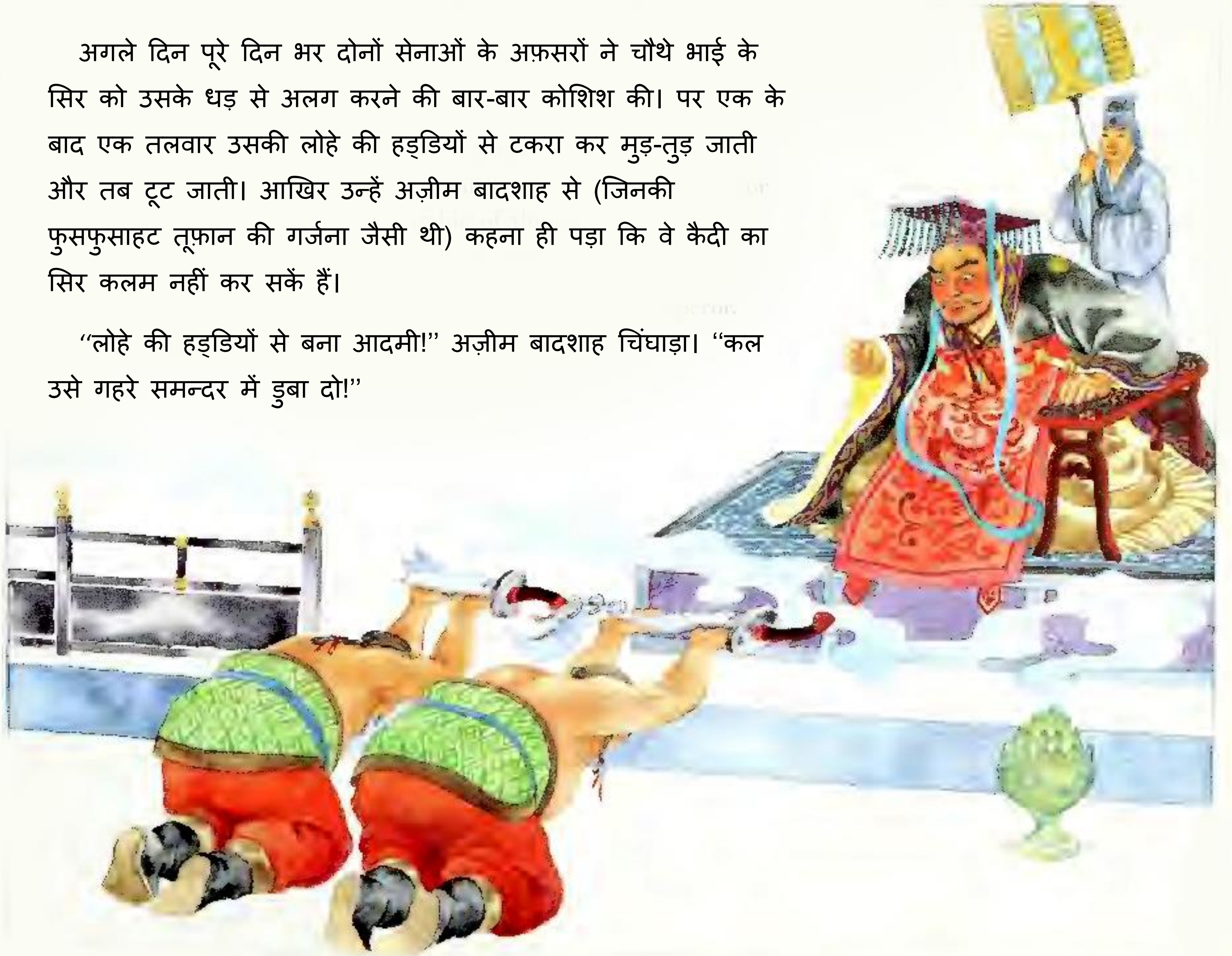

जब चौथे भाई ने सुना कि उसे समन्दर में डुबा दिया जाने वाला है, वह फ़िक्र में पड़ गया।

“मेरी लोहे की हड्डियाँ मुड़ती नहीं, लचकती नहीं, ना ही टूटती हैं, पर बेशक वे डूब सकती हैं,” उसने मन में सोचा और फफक पड़ा।

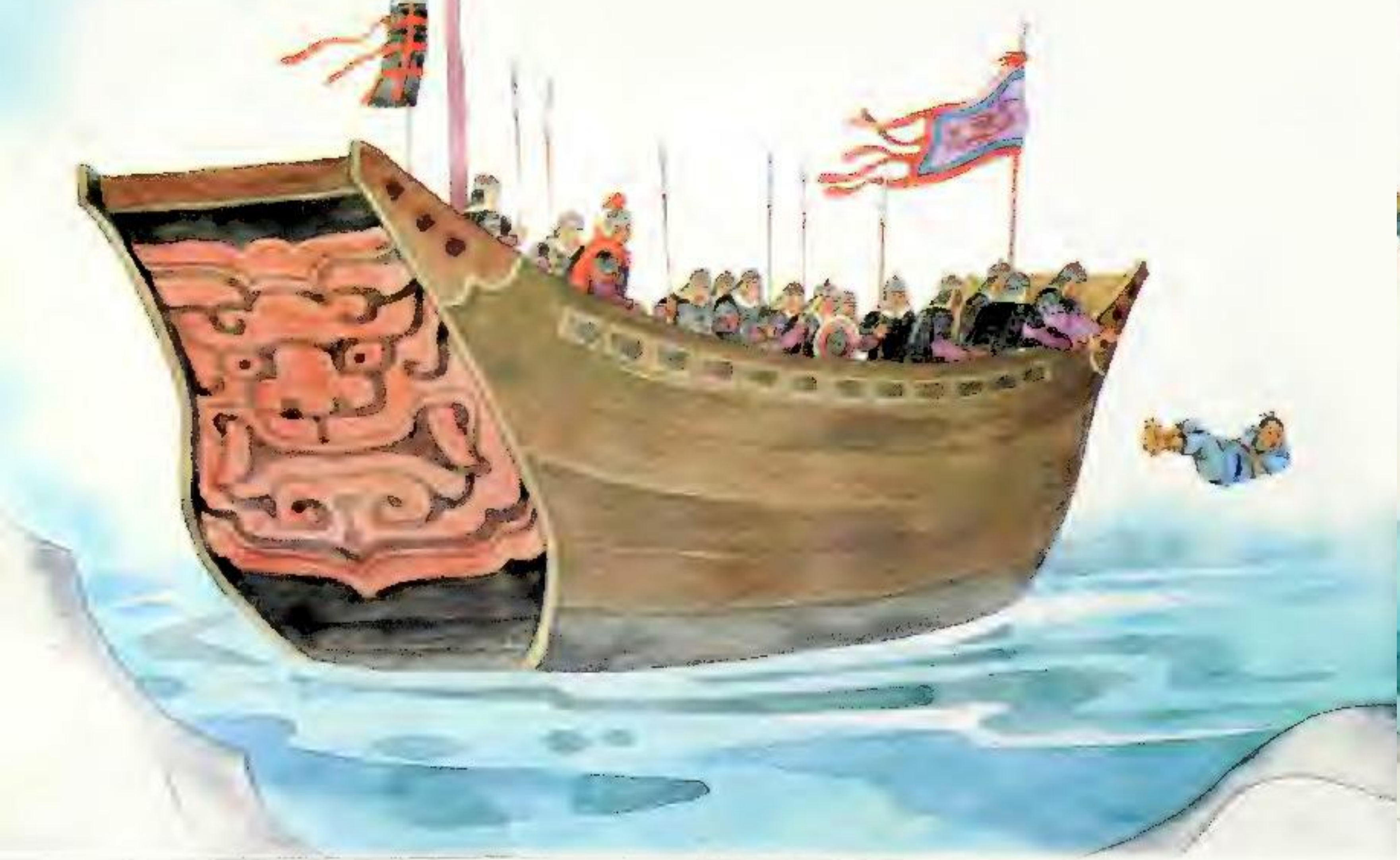

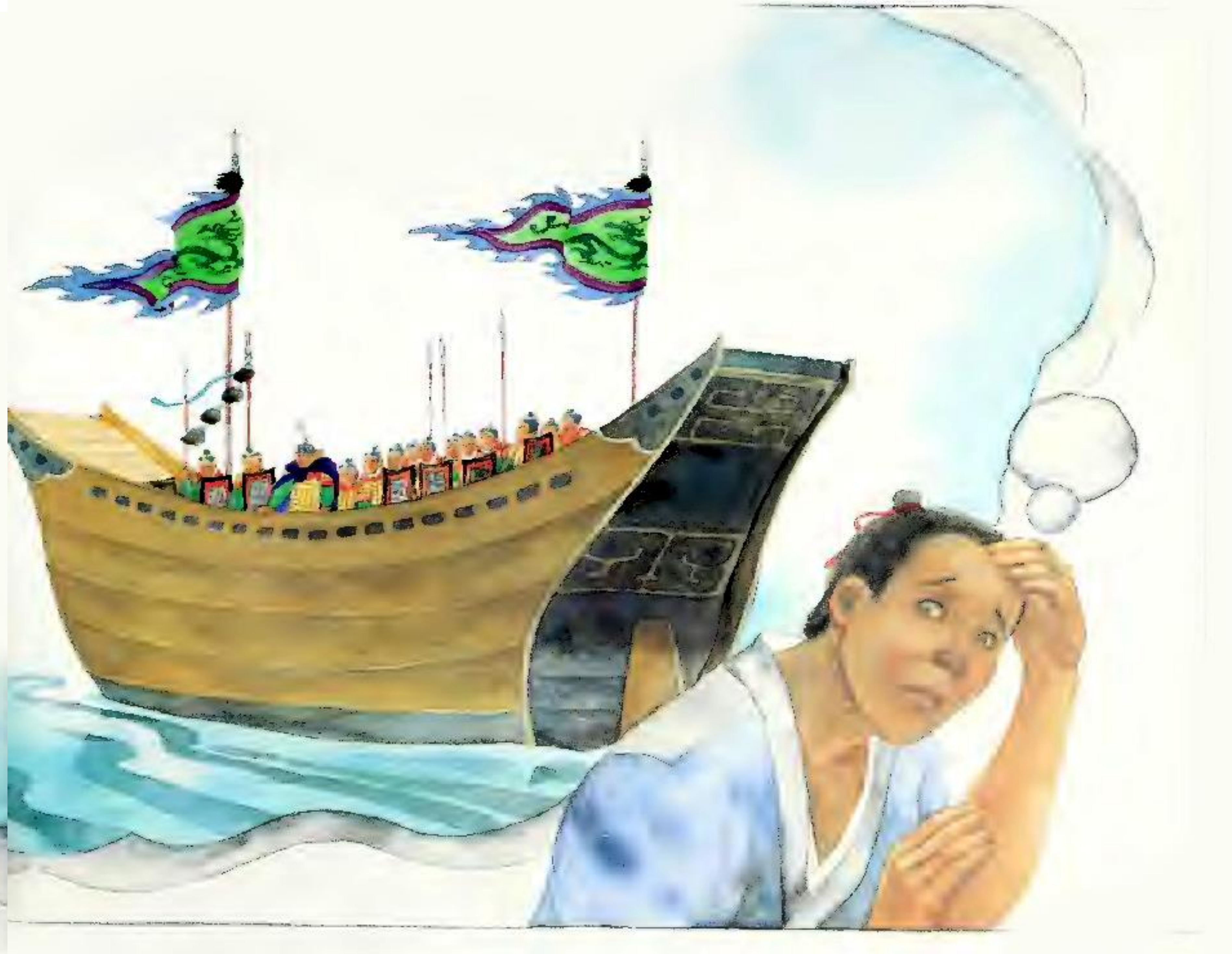

सौ मील दूर खूबसूरत पहाड की तलहटी में पहले भाई ने चौथे को रोना शुरू करते सुना।

"चौथा भाई रो रहा है," उसने कहा। दूसरे भाई ने पहाड़ों के पास दूर देख कर कहा, "अई या! कल सुबह वे उसे समन्दर में डुबा देने वाले हैं। कोई अचरज नहीं कि वह रो रहा है।"

"फ़िक्र न करो," पाँचवे भाई ने बात बीच में ही काटते हुए जल्दी से कहा, "मैं उसके साथ जगह बदल लूंगा। अज़ीम बादशाह (जिनकी फुसफुसहाट तूफ़ान की गर्जना-सी थी) मुझे जितनी बार डुबाना चाहे डुबाने की कोशिश कर सकता है। शायद इससे उसे बेहतर महसूस हो।"

वह फ़ौरन चल पड़ा और पलक झपकने के पहले ही आधे मिनट में ही वहाँ जा पहुँचा। वह दबे पाँव पहरेदारों के बीच से होता हुआ चौथे भाई के पास पहुँच गया, जो उसके इन्तज़ार में जाग रहा था। दोनों ने जगह बदली और चौथे भाई घर लौट गया।

अगले दिन दोनों सेनाओं ने पाँचवें भाई को डुबाने की भरसक कोशिश की। उसे गहरे समन्दर में फेंका, पर उसके पाँव इतनी तेज़ी से लम्बे हुए कि पानी बस घुटनों तक ही आया।

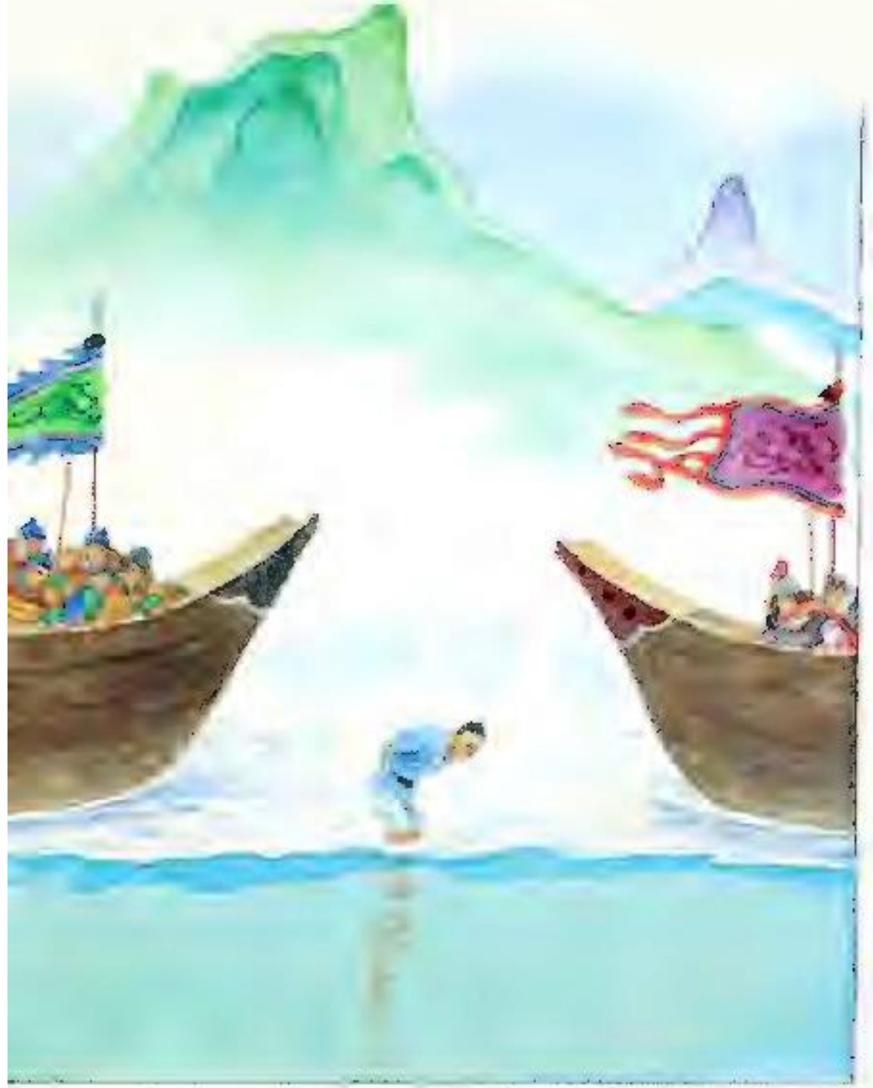

तब उन्होंने उसे और गहरे समन्दर में फेंका, पर वह गहरा-गहरा पानी भी बस उसकी कमर तक ही पहुँचा।

आख़िर उन्होंने समन्दर की सबसे गहरी जगह फेंका। पर पानी अब भी उसके गले तक ही था। उसकी ठुड्डी के नीचे लहरें आ-आ कर टूटती रहीं।

"आहहह!" पाँचवे भाई ने मज़े से मुस्कुराते कहा, गहरे समन्दर का पानी कितना बढ़िया और ठण्डा है।"

"यह आदमी तो जितना मैंने सोचा था उससे भी ज़्यादा ख़तरनाक है," अज़ीम बादशाह (जिसकी हल्की सी नज़र भी बिजली की कड़क-सी थी) बड़बड़ाया। उसे डुबाया नहीं जा सकता, पर जलाया तो जा सकता है। कल सुबह उसे आग में झोंक दो!" उसने हुक्म दिया।

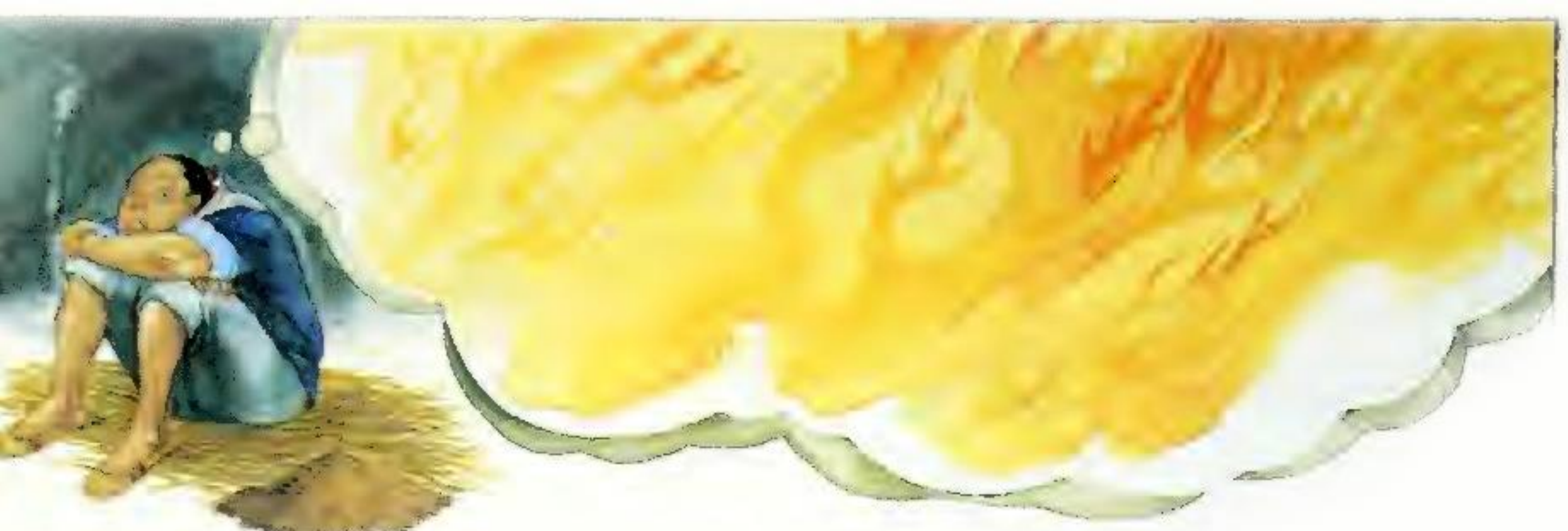

जब पाँचवे भाई को उसकी किस्मत का फ़ैसला सुनाया गया, उसकी रुलाई छूट गई।

बहुत दूर, उस खूबसूरत पहाड़ी की तलहटी में पहले भाई ने पाँचवे भाई को रोते सुना। दूसरे भाई ने सौ मील दूर चीन की दीवार के पास देखा।

"अई या!" वह चीखा। " कल सुबह वे पाँचवें भाई को ज़िन्दा जला देंगे। कोई अचरज नहीं कि वह रो रहा है।"

"फ़िक्र न करो," छठे भाई ने कहा, जिसे डर था कि सातवाँ भाई रो न पड़े। "मैं उसकी जगह ले लूंगा। अज़ीम बादशाह (जिसकी हल्की-सी नज़र भी बिजली की कड़क-सी थी) चाहे मुझे पूरे दिन जलाएं-पकाएं," उसने ठण्ड में सिहरते कहा। "शायद इससे उन्हें बेहतर महसूस हो।"

वह फ़ौरन निकल पड़ा और पलक झपकने के पहले आधे मिनट में ही वहाँ जा पहुँचा। वह एहतियात से दोनों सेनाओं के बीच से निकला और पाँचवें भाई को ढूंढ लिया, जो उसके इन्तज़ार में जाग रहा था।

तो अब पाँचवां भाई घर चला गया और छठे ने उसकी जगह ले ली।

अगले दिन दोनों सेनाएं आगे-पीछे दौड़ी-भागीं और सारे सिपाही जलावन की लकड़ियाँ, बह आई लकड़ियाँ, झाड़-झंखाड़ और सूखी घास के पुलिन्दे इकट्ठा करने में जुट गए। उन्होंने ऐसी विशाल आग जलाई कि उसका धुँआ चीन के एक से दूसरे कोने तक फैल गया पर छठे भाई को तपिश या जलन महसूस ही नहीं हुई। उसने सहती-सुहानी गरमाहट में खुशी की साँस भरी।

"अज़ीम बादशाह कितना मेहरबान है, उसने अपनी आग में मुझे शरीर तापने की छूट दी है," छठे भाई ने कहा।

इधर अज़ीम बादशाह (जिसकी पेशानी पर बल पड़ने पर धरती ऐसे कांपती थी मानो भूकम्प आया हो) आगबबूला हो उठा था। "शाही तीरंदाज़ों को बुलवाओ!" उसने हुक्म दिया। "कल सुबह हम उसे तीरों से बींध देंगे।

बादशाह का हुक्म सुन छठे भाई को रोना आ गया।

खूबसूरत पहाड़ी की तलहटी में पहले भाई ने छठे को रोते सुना। ''दूसरे,'' उसने पूछा, ''तुम्हें क्या नज़र आ रहा है?''

''अई या!'' दूसरा भाई चीखा। ''वे कल छठे भाई को तीरों से बींधने वाले हैं।''

सभी भाइयों ने एक-दूसरे को देखा। ''अब कोई रास्ता नहीं बचा है,'' पहले भाई ने सबसे कहा। ''हम छठे को यों अकेले मरने नहीं छोड़ सकते। हम सब अज़ीम बादशाह (जिसकी पेशानी पर बल पड़ने पर धरती ऐसे कांपती थी मानो भूकम्प आया हो) के पास हाज़िर होंगे। वह हम सब पर तीर चलवा सकता है। पर कम से कम हम सातों साथ तो होंगे।''

सभी भाई महल जाने को निकल पड़े, बेचारा सातवाँ इस कदर दुखी था कि थोड़ा-सा रो ही पड़ा। उसकी आँसू की पहली बूंद चीन की सबसे लम्बी नदी जितनी बड़ी थी। आँसू की दूसरी बूंद चीन की दूसरी सबसे लम्बी नदी समान थी। दोनों ही बूंदें समुद्री पानी समान नमकीन थीं।

सड़क पर भाइयों के सामने गरम खारे पानी का सागर-सा बह चला।

सातवें भाई के आँसू की पहली बूंद ने एक सेना को उत्तर दिशा में बहा दिया। आँसू की दूसरी बूंद ने दूसरी सेना को दक्षिण दिशा में बहा दिया।

जहाँ तक बादशाह का सवाल है, वह इतना ऊपर और इतनी दूर तक उछल गया कि वह आज तक अपने महल वापस लौटने की कोशिश कर रहा है।

सातवें भाई के आँसुओं की बाढ़ चीन की महान दीवार के ऊपर हो बही और तब पीले सागर में जा मिली।

अब छठा भाई आज़ाद था।

वह अपने भाइयों से मिलने सड़क पर ऊपर दौड़ा और उसके अनूठे भाई नीचे की ओर। वे चीन की महान दीवार के पास मिले।

"मछलियाँ!" पाँचवां भाई चीखा। बाढ़ की लहरें सैकड़ों चमचमाती मछलियों को बहा लाई थी। वे वहाँ छटर-पटर कर रही थीं। उनका ढ़ेर इतना बड़ा था कि पाँचवे भाई के घुटनों को छू रहा था।

"लकड़ी!" तीसरा भाई आग जलाने के लिए जंगल से लकड़ियाँ बटोरते चीखा।

चौथे भाई ने अपनी लोहे की उंगली को लोहे के अंगूठे से लगा चुटकी बजाई उससे निकली चिन्गारी ने आग की लपटें सुलगा दीं।

"आग!" वह खुशी से चीखा।

"ओह, मैं बेहद भूखा हूँ," सातवें भाई ने कहा।

"अब जब हम सब साथ हैं, हम मछलियाँ खाएंगे और अपनी सारी परेशानियों को भूल जाएंगे। मैं वादा करता हूँ कि मैं अब कभी नहीं रोऊंगा, जब तक कि रोने की ज़रूरत बिल्कुल ही न पड़ जाए।"

सो सातों भाई गरम आग के गिर्द बैठे और स्वादिष्ट भुनी मछलियों की दावत उड़ाई ... क्योंकि उलझनों व परेशानियों से भरे उस सप्ताह के बाद वे सब बेहद भूखे थे।